Journal
Of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

हिन्दी की वृद्ध जीवनपरक कहानियों में भारतीय ज्ञान परम्परा

डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय,
रीवा, म.प्र.
ईमेल- lkchandela@rediffmail.com

सारांश

सारांश – वृद्ध ज्ञान की सबसे श्रेष्ठ व शाश्वत निशानी है जो अभाव और अनुभव से प्राप्त होती है इसलिए प्राणिजगत् के लिए धरोहर हैं। हिन्दी की वृद्ध जीवनपरक कहानियाँ इन्हीं सारभूत अनुभवों को अपना कथ्य बनाती हुई संवेदना का संसार व्यापक बनाती हैं बल्कि उन्हें ठीक-ठीक सँजो पाती हैं। कालान्तर में यही संपुँजित ज्ञान जीवन के नये-नये प्रतिमान गढ़ता है।

भारतीय आर्ष ग्रंथों की बात करें तो किसी भी सभा में वृद्धों की उपस्थिति को महत्ता दी और कहा कि- 'न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा/ वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्' (अर्थात् जिस सभा में कोई वृद्ध नहीं है वह सभा महत्त्वहीन है और जो वृद्ध सत्य एवं धर्मनिष्ठ नहीं है वह वास्तव में वद्ध नहीं है)

अस्तु, हिन्दी की वृद्ध जीवनपरक कहानियाँ अनुभवजनित ज्ञान का हेतु बनीं तथापि भारतीय ज्ञान परम्परा का अजस्र स्रोत हैं। निश्चित ही बुढापा ज्ञान की पोटरी होता है।

बीज शब्द – वृद्ध, जीवन, कहानी और ज्ञान-परम्परा

जीवन अजस्र स्रोतों का पुँज है जिसमें साथ, समझ और समर्पण का भाव सन्निहित है। साथ, समझ व समर्पण का प्रबोध अनुभव से अनुशासित होता इसलिए अनुभव ज्ञान का पर्याय होता है तथापि जीवन के लिए जरूरी माना गया। इस अनुभव को सहेजने के लिए मन, वचन, कर्म से समर्पण होना पड़ता है तभी जीवन का ठीक-ठीक हिसाब-किताब बैठ पाता है। आधुनिक-उत्तर

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

आधुनिक युग की पीढ़ी अनुभव को जीवन के हिसाब-किताब का पैमाना नहीं मानती, वह तो क्षणिक, सौन्दर्यानुभूत भौतिक चीजों को मान बैठी है। इसलिए युवाजन वृद्धों के साथ तो होते हैं, पर उन्हें समझ नहीं पाते, इसलिए उनका अनुभवजनित ज्ञान लेने से वंचित हो जाते हैं। आनुधनिक हिन्दी की कहानियां इन्हीं सत्यों को उद्घाटित करती हुई पाठकों को आकर्षित करती है। यही कारण है कि आज के बच्चों-व्यक्तियों में समझदारी की बजाय बहसदारी ज्यादा आई है।

पहले के जमाने में बालक, वृद्ध सभी में साथ व समझदारी का भाव होता था, इसलिए अल्प आयु का बालक भी ज्ञान और समझदारी बात कर दे तो समाज स्वीकार करता था क्योंकि समय-समाज जानता था - 'बड़े न हूजे गुनुन बिनु, विरद बड़ाई पाय।'(तुलसीदास)

बहरहाल, जीवन और संस्कृति मूल रूप में जुडे हुए हैं बल्कि संघटित हैं अंतः-बाह्य की सीमावृत्त मर्यादाओं में, इसलिए व्यक्ति-जीवन के उत्तरार्द्ध में इनकी संपृक्ति व आवाजाही अनुभव के रूप में विद्यमान रहती है क्योंकि अनुभव सहयात्री की तरह दामन थामे रहता है इसलिए **वृद्ध और ज्ञान परिकल्पना नहीं पर्याय हैं।** यानि ''वृद्ध एक स्मृति है, एक अनुभव और एक संस्कृति है।''[1] वरिष्ठ कहानीकार दिनेश भट्ट का साधारण-सा दिखने वाला यह कथन जीवन की असाधारणता का साक्षी है बल्कि विषय के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परम्परा का सूत्र वाक्य एवं वर्तमान का आप्त वाक्य है क्योंकि 'बड़े न हूजे गुनुन बिनु' की संस्कृति को हम विस्मृत करते जा रहे हैं, दूर होते जा रहे हैं वृद्ध जनों के अनुभवपरक गीता ज्ञान से, जबकि ये ही भारत के ज्ञानपुँज हुआ करते थे। इसलिए 'पितृ देवो भवः' और 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादापि गरीयसी' की मर्यादा में पितृऋण एवं मातृऋण से उऋण होने का प्रयत्न करते थे जिन्हें चुकाए बगैर मोक्ष की कल्पना नहीं की जाती थी। लेकिन आज वही माता-पिता उलझन बनते जा रहे हैं। उनका अनुभवजनित ज्ञान बंधन महसूस होता है तथा नागवार लगता है सहज-सार्थक सुझाव; इसलिए उन पर अवांछनीय पैबंद प्रारंभ कर दिए हैं। यह सत्य है वृद्धावस्था मनुष्य जीवन का उत्तरार्द्ध है जिसमें अनेकों कठिनाइयाँ, बेबसी और लाचारियाँ होती हैं इसलिए भारतीय मनीषियों ने दारुण स्थिति को समझते हुए माता-पिता (वृद्ध जनों) को देवत्व प्रदान करते हुए कहा - 'न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा/ वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्' (अर्थात् जिस सभा में कोई वृद्ध नहीं है वह सभा महत्त्वहीन है और जो वृद्ध सत्य एवं धर्मनिष्ठ नहीं है वह वास्तव में वद्ध नहीं है) किन्तु समय का यह दुष्चक्र कहिए जहाँ वृद्धावस्था/ वृद्धजीवन अभिशाप बनता जा रहा है। जबकि वृद्धावस्था मात्र शारीरिक जर्जरता नहीं है बल्कि वृद्धत्व में ज्ञान,

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

अनुभव, सत्यता, धर्मनिष्ठता, परिपक्वता आदि गुणों का समुच्चय है। जीवन के अनुभव ने जिसे प्रौढ़ता दी, वह वृद्ध है अथवा जो जीवन भर जोड़-गांठ करते-करते सार्थकता को प्राप्त करे, वही वृद्ध है। जैसे उषा प्रियंवदा की वापसी कहानी के गजाधर बाबू की पत्नी कहती है- ''जोड़-गांठ करते-करते बूढ़ी हो गई।''[2]

पुनश्च, मानस को एक और प्रश्न उद्वेलित कर रहा है कि भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल आधार क्या है इसके दो उत्तर प्रतीत होते हैं, पहला वृद्ध और दूसरा, आर्ष ग्रंथ। जिनके बीज ज्ञान से सारा संसार संचालित एवं गतिमान रहा है। भविष्य को और अधिक सुदृढ़, सम्पन्न, उन्नत, विकसित एवं चैतन्य बनाना है तो इन आधार स्रोतों (वृद्ध और आर्ष ग्रंथों) को संरक्षित करना होगा, इनमें निहित बीज ज्ञान को जीवन के व्यावहारिक व सैद्धांतिक ज्ञान का हेतु बनाना होगा। प्रस्तुत शोध परिकल्पना में इन्हीं हेतुओं का ध्यान रखा गया है जिससे वृद्ध जीवनपरक कहानियों में भारतीय ज्ञान परम्परा के कुछ सूत्र खोजे जा सकें। ऐसा प्रयास ही नहीं एक कोशिश होगी कि उनके ज्ञान को वर्तमान समय जाने, पहचाने एवं समोन्नत विकास का कारक बनाये। यदि ऐसा हुआ तो भारत पुनः विश्व गुरू बनेगा, साथ ही विश्व में शांति, सद्भाव कायम होगा तथा युद्ध जैसी वीभत्स स्थितियों से बच सकेंगे। प्रकृति का सुसंगत उपयोग होगा, नदियां संरक्षित होंगी और अंत में वृद्ध जीवन भी पुराकालीन पितृ देवो भवः की संकल्पना से मूर्तमान हो सकेगा।

बानगी के तौर पर उदय प्रकाश की 'छप्पन तौले का करधन' हो कि न हो, जीवन में आस बंधाए रखने के लिए जरूरी है। वृद्ध जीवनपरक कहानियों में ज्ञान परम्परा के ऐसे अजस्र स्रोत भरे पड़े हैं, बस ग्राहिता उसे सहज रूप में ग्रहण करे। जैसे इसी कहानी की बूढ़ी सयानी कहती है- ''अभी तो बेटा, बहू दाल-भात ड्योढ़ी पर रख जाती है, करधन मैंने दे दिया तो फिर कौन-सी आस रह जायेगी करधन हो कि न हो, वह मेरे लिए और तुम सब की आस के लिए जरूरी है।''[3] जीवन में हारी-बीमारी व अवस्था के उत्तरार्द्ध में कई संकट, कई मोड़ आते हैं जिनमें पैसा-पूंजी की आवश्यकता होती है। वस्तु रूप में संरक्षित करधन ऐसी पूंजी है कि व्यक्ति को अंत तक भात व साथ मिलने की आस बंधाती है। इसलिए इस अनुभवजनित ज्ञान को साधना, सहेजना अति आवश्यक है।

यानि 'करधन' बीज ज्ञान है मनुष्य जीवन का। मनुष्य जब उत्तरार्द्ध अवस्था में आता है तब परिवार जनों से इसी धन की प्राप्ति की आशा में सेवा-सत्कार, देख-भाल, दाल-रोटी मिलती रहती है, वरना

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

वस्तु समझकर कोने दिखाया जाता है जैसे भीष्म साहनी की चीफ की दावत और प्रेमचंद की बूढी काकी, उषा प्रियंवदा की वापसी आदि।

ज्ञान का दूसरा बीज खजाना शामनाथ की बूढी मां है यदि फुलकारी बनाने की हस्तकला का ज्ञान नहीं होता तो सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई थी बल्कि ''घर का फालतू सामान आलमारियों के पीछे और पलगों के नीचे छिपाया जाने लगा था।''[4] मगर अंत में ही सही बूढी मां के हस्तकला का ज्ञान बेटे के उज्ज्वल भविष्य का कारण बनती है। यदि यह ज्ञान व कला वृद्ध मां के पास नहीं होता तो शायद बेटे की उन्नति नहीं हो सकती थी। इस तरह वृद्ध जनों का तजुर्बा व उम्र भर का अनुभव ज्ञान रूप में हमारे साथ होता है जिसको धार्य कर उन्नति-दर-उन्नति कर सकते हैं। निश्चित ही व्यक्ति, समाज व राष्ट्र का विकास वृद्धजनों के जीवन भर अर्जित अनुभव ज्ञान के संभव नहीं। शामनाथ कहता है माँ-

''यूँ चली जाओगी। मेरा बनता काम बिगाड़ोगी जानती नहीं, साहब खुश होगा, तो मुझे तरक्की मिलेगी। ... जो साहब खुश हो गया, तो मुझे इससे बड़ी नौकरी भी मिल सकती है, मैं बड़ा अफसर बन सकता हूँ। ...

तो मैं बना दूँगी बेटा, जैसा बन पड़ेगा, बना दूँगी।

और माँ दिल-ही-दिल में फिर बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कामनाएँ करने लगीं।''[5]

इस तरह वृद्धजीवन भारतीय ज्ञान परम्परा का अक्षय स्रोत होते हैं जिनके अनुभव, कला, तकनीक, शिक्षा, संदेश भावी पीढ़ी के हितकारी लिए होते हैं।

वृद्ध जीवन पर केन्द्रित कहानियां ये भी बताती हैं कि-''प्रेम और मनुहार के पुराने पारिवारिक प्रसंग अकेलेपन में जीवन्त होकर परिवार के साथ जीने की आकांक्षा को बलवती बनाते हैं।''[6] जैसे उषा प्रियंवदा की 'वापसी' कहानी का गजाधर बाबू अपने उत्तरार्द्ध जीवन को उत्साही बनाते हैं क्योंकि नौकरी के ''वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रहकर काटा था। उन अकेले क्षणों में उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी, जब वे अपने परिवार के साथ रहेंगे। इसी आशा के सहारे वे अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे।''[7] जीवन में अभाव तो आता है लेकिन अभावों के साथ कैसे और क्यों जिया जाए जैसी आशा-इच्छाओं को बलवती बनाती है गजाधर बाबू की इच्छा तथापि आशा के सहारे जीवन का बोझ ढोते रहना। बाल-बच्चों के साथ रहने की कल्पना में अभाव को ही आधार

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

बना लेना भारतीय ज्ञान परम्परा की विशिष्टता है। फिर अभाव में आशा का संचार कैसे होता है इस कहानी के वृद्ध पात्र गजाधर बाबू की सोच से जाना जा सकता है। इससे यह भी बोध होता है कि अभाव जीवन की सच्चाई है किन्तु दु:ख का कारक नहीं सुख की सबल अनुभूति है। कालान्तर में ज्ञान के इन्हीं आयामों को हम संस्कृति बना लेते हैं तथा जीवन में सुख-सौन्दर्य का अनिवार्य घटक। ''तुम्हें किस बात की कमी है, अमर की माँ घर में बहू है, लड़के-बच्चे हैं, सिर्फ रुपये से ही इंसान अमीर नहीं होता।''[8] कहानी में निहित सच्चाई ''इस हकीकत को बुलन्द करती है कि पारिवारिक ही नहीं रागात्मक रिश्तों की धुरी अर्थ है।''[9] यह ज्ञान भारतीय वृद्ध जनों की संपदा है जिसे प्राप्त कर जीवन में सुख-शांति रूपी अमरत्व प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा दिव्य ज्ञान वृद्ध जनों के अनुभव के अलावा कहीं नहीं मिलता जिसे भारतीय मानस अंत:मन से स्वीकार करता है, ग्राह्य बनाता है।

वृद्ध जीवनानुभव के एक-एक शब्द, हम सबको गहरे मौन में डुबा देते हैं क्योंकि यह बरसों की साध से फलीभूत होता है। उनका अस्तित्त्व ही घर के वातावरण को जीवन के अनुकूल और समाज को अग्रगामी बनाता है बल्कि ठीक-ठीक समझ पायें तो हमारे कर्तव्य बोध को जगाता है, ऐसा ज्ञान उनके साथ-साथ चारपाई के आस-पास भी विद्यमान रहता है। ''गजाधर बाबू को बराबर यह महसूस होता रहता था कि उनके घर का रहन-सहन और खर्च उनकी हैसियत से कहीं ज्यादा है।''[10] यानि व्यक्ति को हैसियत से ज्यादा खर्चा नहीं करना चाहिए वरन घर का वातावरण बिगड़ जायेगा एवं अशांति उत्पन्न होगी। यह ज्ञान वृद्ध जनों का अनुभव जनित है जो भारतीय ज्ञान परम्परा का हेतु है।

ज्ञान की ऐसी ही पोटरी राजेश झरपुरे अपनी कहानी 'गुम हो चुके पते वाले घर' में खोलते हैं एवं बतलाते हैं कि गर्व और गौरव कब और किस पर करना चाहिए। ''तेरे पिता बचपन से एक बड़ी नाव को खेते चले आ रहे हैं। इस बात का उन्हें गुमान है। वे घर में अकेले कमाऊपूत थे। तेरे दादा खेतीहर मजदूर थे। दिहाड़ी पर जाया करते। परिवार बड़ा था। तेरे दादा से परिवार का गुजर-बसर नहीं हो पाता था। कई-कई दिन आधू-अधूरे पेट और कई रातें फाकें में गुजर जाती थी। तेरे पिता की मूंछ की रेखा भी नहीं निकली थी, उस समय से दिहाड़ी में जाने लगे थे। उनकी मेहनत और लगन के कारण तुम सब पढ़-लिख पाये। तुम्हें सुखी-सम्पन्न जीवन मिला। हमने तो अपना बचपन बेहद दरिद्रता में काटा। तेरे पिता का बचपन तो हाथों के छाले और कंधों के जख्म से सदा

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

भरा रहा। दु:ख और दरिद्रता से लड़ने की आदत उन्होंने बचपन से ही डाल ली थी। आज तुम लोगों के पास जो कुछ है, सब उन्हीं की मेहनत की बदौलत है।''[11] लोक में कहावत भी है –'बाढ़ैं पूत पिता के करमन' यानि पिता की लगन और मेहनत से पूरा परिवार आगे बढ़ता है, सुखी और सम्पन्न हो पाता है। इस तरह व्यक्ति को कब से मेहनत और कितनी लगन से करनी चाहिए(बचपन से ही लगन व मेहनत करने की आदत) यह ज्ञान भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रबोध्य है।

जो उम्र मेरी है वो तेरी भी होगी या जो उम्र तेरी है वो मेरी भी होगी का ज्ञान वृद्ध जनों से ही मिलता है। भले ही यह जीवन की चौथी अवस्था का परिचायक है किन्तु उम्र भर के अनुभव और अनेकानेक अभावों के जोड़-घटा से प्राप्त होती है। चीफ की दावत कहानी में शामनाथ की मां यूं ही नहीं कहती –

''चूड़ियां कहां से लाऊं, बेटा तुम जानते हो, सब जेवर तुम्हारी पढ़ाई में बिक गए।''[12]

अथवा जो बस में नहीं उसे कैसे रोका जा सकता है-

''और मां, आज जल्दी सो नहीं जाना। तुम्हारे खर्राटों की आवाज दूर तक जाती है।''

मां, लज्जित-सी आवाज में बोलीं, ''क्या करूं बेटा, मेरे बस की बात नहीं है। जब से बीमारी से उठी हूं, नाक से सांस लेते नहीं ले सकती।''[13] कहानीकार हनुमंत मनगटे का ''दादू इन हादसों और सुखद क्षणों के चश्मदीद गवाह थे, जो अपने भीतर की अदालत में आवश्यकता होने पर गवाही देने उपस्थित हो जाते थे।''[14]

ऐसे ही वापसी कहानी में कपड़े बदलकर बाहर निकली बसंती को ''गजाधर बाबू ने टोक दिया – कहां जा रही हो

''पड़ोस में शीला के घर।''

कोई जरूरत नहीं है, अंदर जाकर पढ़ो'' – गजाधर बाबू ने कड़े स्वर में कहा।

 +

''लड़की के इतने मिजाज ! जाने से रोक दिया तो पिता से बोलेगी ही नहीं।''[15]

पिता का कड़े स्वर में कहना, रात में दूसरे के घर जाने से मना करना, बेटी का पिता से न बोलना अनुभव सिद्ध कथन हैं जो जीवन के कटु सत्य व अखंड ज्ञान के सूचक हैं। इन वाक्यों में परिवार व समाज की भलाई छुपी हुई अथवा होनी-अनहोनी से बचने की संभावना सन्निहित है। यह घाट-घाट घूमने के अनुभवों से सिद्ध है। इसलिए हिन्दी की वृद्ध जीवनपरक कहानियां आज के मानव जीवन के लिए ज्ञान का संपुंजन है।

वृद्ध जीवन के अनुभव ज्ञान की खासी इबारत है जो वृद्ध जनों के अलावा कहीं और दिखाई नहीं देता, जैसे 'न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा/ वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्। **इस तरह** जीवन दर्शन के बीज-ज्ञान का मूल स्रोत इन्हीं में ढूँढा जाए। हिन्दी की वृद्ध जीवनपरक कहानियां यही कह रही हैं।

इस तरह वृद्ध जीवन के अनुभव ज्ञान की खासी इबारत है जिससे हिन्दी की वृद्ध जीवनपरक कहानियाँ यथा- बूढी काकी, चीफ की दावत, छप्पन तोले का करधन, वापसी, दादू, 'गुम हो चुके पते वाले घर' आदि भारतीय ज्ञान परम्परा के अजस्र स्रोत हैं क्योंकि यह अनुभव ज्ञान जीवन भर जोड़-गाँठ करते-करते प्राप्त करते हैं। कहा भी गया है जिस पिता का बचपन हाथों के छाले और कंधों के जख्म से भरा रहा तथापि जो कुछ भी हमारे पास है उन्हीं की मेहनत और लगन की बदौलत है। अतएव वृद्ध जीवनपरक कहानियां **ज्ञान की पोटरी है।**

सुझाव – हमारे विकास का हेतु अनुभवजनित ज्ञान है इसलिए उस हेतुक(वद्ध) धरोहर को संरक्षित करना होगा हैं। यदि हम ऐसा कर सके तो भारत पुनः विश्व गुरू बनेगा तथा विश्व में शांति, सद्भाव कायम होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. चंदेला, लक्ष्मीकान्त, पटवारी, टीकमणि, भनोत्रा, सागर, संपादक. आधुनिक भारतीय समाज में वृद्धजनों की दशा और दिशा. जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स वी-508, गली नं. 17, विजय पार्क, दिल्ली-110053, प्रथम संस्करण 2019, पृ. 11
2. नायक, डॉ. गीता, संपादक. हिन्दी कथा साहित्य. मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा, भोपाल- 462003, द्वितीय आवृत्ति 2016, पृ. 175
3. प्रकाश, उदय, तिरिछ कहानी संग्रह. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1989, पृ. 58
4. नायक, डॉ. गीता, संपादक. हिन्दी कथा साहित्य. मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा, भोपाल- 462003, द्वितीय आवृत्ति 2016,पृ. 89
5. वही-पृ. 97
6. वही-पृ. 170
7. वर्मा, धनंजय, संपादक. आधुनिक हिन्दी कहानी. मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा, भोपाल- 462003, सप्तम् संस्करण 1992, पृ. 101-102
8. वही-पृ. 105

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

9. जलील, वी.के. अब्दुल. आधुनिक हिन्दी साहित्य विविध आयाम. वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण 2000, पृ. 104
10. वर्मा, धनंजय, संपादक. आधुनिक हिन्दी कहानी. मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा, भोपाल- 462003, सप्तम् संस्करण 1992, पृ. 109
11. चंदेला, लक्ष्मीकान्त, पटवारी, टीकमणि, भनोत्रा, सागर, संपादक. आधुनिक भारतीय समाज में वृद्धजनों की दशा और दिशा. जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स वी-508, गली नं. 17, विजय पार्क, दिल्ली-110053, प्रथम संस्करण 2019, पृ. खण्ड स 27
12. नायक, डॉ. गीता, संपादक. हिन्दी कथा साहित्य. मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा, भोपाल- 462003, द्वितीय आवृत्ति 2016,पृ. 90
13. वही-पृ. 90
14. चंदेला, लक्ष्मीकान्त, पटवारी, टीकमणि, भनोत्रा, सागर, संपादक. आधुनिक भारतीय समाज में वृद्धजनों की दशा और दिशा. जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स वी-508, गली नं. 17, विजय पार्क, दिल्ली-110053, प्रथम संस्करण 2019, पृ. खण्ड स 07
15. वर्मा, धनंजय, संपादक. आधुनिक हिन्दी कहानी. मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा, भोपाल- 462003, सप्तम् संस्करण 1992, पृ.106